दर्शन

दर्शन

- दर्शन-दृष्टि
- व्युत्पति
- दृश् धातु मे ल्युट् प्रत्यय
- दृश्यते अनेन इति दर्शनम्

भारतीय दर्शन के २ रुप:

- १.आस्तिक दर्शन (वेद के अनुयायी)

  २.नास्तिक दर्शन (नास्तिको वेद निन्दक)

प्रमेय,संशय,प्रयोजन,दृष्टांत,सिद्धांत,अवयव,तर्क,निर्णय,
वाद,जल्प,वितंडा,हेत्वाभास,छल,जाति,निग्रह स्थान

- आस्तिक दर्शन- (न्याय-वैशेषिक,सांख्य-योग,मीमांसा-वेदान्त)
- नास्तिक दर्शन- चार्वाक दर्शन
- आस्तिक-नास्तिक -जैन,बौद्ध दर्शन

न्याय दर्शन

- गौतम मुनि की रचना
- आन्वीक्षिकी,तर्क विधा,वाद विधा
- १६ पदार्थ/तत्वों माने है
- पिठरपाक का वर्णन
- परमाणुवाद ,आरम्भवाद,असत्कार्यवाद,त्रैतवाद
- राग-द्वेष दुख के हेतु
- १६ तत्वो के ज्ञान से मोक्ष की प्राप्ति

- ईश्वरवादी दर्शन, ईश्वर की सत्ता मे विश्वास करता है।
- ३ मूल तत्व मानते है-ईश्वर,जीव,प्रकृति
- ४ प्रमाण (प्रत्यक्ष,अनुमान,शब्द,उपमान) मानते है।

वैशेषिक दर्शन

- विशेष नामक पदार्थ का विशिष्ट प्रतिपादन के कारण इसका नाम को वैशेषिक दर्शन
- पर्याय-औलूक्य/काश्यप दर्शन/समान न्याय/समान तन्त्र
- महर्षि कणाद इस दर्शन प्रणेता है
- षट्पदार्थ को माना
- कार्य-कारणवाद,आरंभवाद,परमाणुवाद,अलौकिकवाद,असत्कार्यवाद माना
- २ प्रमाण-प्रत्यक्ष,अनुमान
- तत्व ज्ञान से राग-द्वेष से मुक्त होकर मोक्ष को प्राप्त करता है।

सांख्य दर्शन

- आचार्य कपिल प्रणेता
- पर्याय-षष्टि तन्त्र/ सांख्यषड्ध्यायी
- २५ तत्वों का प्रतिपादन
- प्रकृति,पुरुष से भिन्न है,२५ वां तत्व पुरुष को माना
- ३ प्रमाण-प्रत्यक्ष,अनुमान,शब्द
- परिमाण वाद,सत्कार्य वाद,पंगु-अन्ध न्याय
- सृष्टि उत्पत्ति

- २५ तत्वों के ज्ञान से पुरुष को दुःखो से मुक्ति मिल जाती है।२५ तत्वों को ४ प्रकार से वर्गीकरण किया है

प्रकार	संख्या	नाम
प्रकृति	१	अव्यक्त
विकृति	१६	एकादश इन्द्रिया व पंचमहाभूत
प्रकृति-विकृति	७	महत,अंहकार,पंच तन्मात्राएं
न प्रकृति- न विकृति	१	पुरुष

क्षिप्त,मूढ,विक्षिप्त,एकाग्र,निरुद्ध योग दर्शन

- प्रवर्तक पंतजलि
- योगो चित्तवृत्तिनिरोधः
- अष्टांग योग-यम,नियम,आसन,प्राणायाम,प्रत्याहार,धारणा,ध्यान,समाधि
- ४ पाद-समाधि,साधन,विभूति,कैवल्य
- ३ प्रमाण-(प्रत्यक्ष,अनुमान,शब्द)
- द्वैतवाद,ईश्वरवाद का वर्णन

मीमांसा दर्शन

- आचार्य जैमिनि इस दर्शन के प्रणेता
- पूर्व मीमांसा या कर्तव्य मीमांसा भी कहते है।
- कर्मवाद को मानते है
- कर्म के अनुसार फल होता है,फल देने वाला ईश्वर नहीं है

वेदान्त दर्शन

- उत्तर मीमांसा,ज्ञान मीमांसा
- ब्रह्म सत्यम् जगत मिथ्या
- विवर्तवाद,एकत्ववाद का वर्णन
- ६ प्रमाण(प्रत्यक्ष,अनुमान,शब्द,उपमान,अर्थापति,अभाव)
- २ पदार्थ-आत्म रुप व अनात्मरुप

जैन दर्शन

- ईश्वर की सत्ता को नहीं मानता
- तीर्थांकर को मानता है
- २४ तीर्थांकर ,वर्धमान महावीर २४वें तीर्थांकर
- अनेकान्तवाद,स्यादवाद को मानते हैं
- २ प्रमाण-प्रत्यक्ष व अनुमान
- कर्म को जीवन का नैतिक नियम व अहिसां को मनुष्य का सर्वोतम गुण माना है
- ७ पदार्थ माने है-जीव,अजीव,आश्रय,बंध,संवर,निर्जरा,मोक्ष

बौद्ध दर्शन

- ईश्वर व वेदो को नहीं मानता
- महात्मा बुद्ध इस दर्शन के प्रणेता
- ४ द्रव्य(जीव,पुद्गल,आकाश,काल)
- २ प्रमाण-प्रत्यक्ष,अनुमान
- क्षणभंगुरवाद,शून्यवाद को मानते है

चार्वाक दर्शन

- लोकायत दर्शन,बार्हस्पत्य
- कर्मफल ,पाप-पुण्य,ईश्वर,मोक्ष को नहीं मानता
- केवल प्रत्यक्ष को मानते
- मृत्यु को ही मोक्ष व काम को ही पुरुषार्थ

THANK
YOU!

- यावज्जीवेत सुखं जीवेद ऋणं कृत्वा घृतं पिवेत,
  भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः ॥